## संपादकीय

### घातक मनोवृत्ति

साइबर दुनिया जहां तरक्की की राह दिखाती है, वहीं अपराधियों के घातक मंसूबों को अंजाम देने का साधन भी बन गई है। दरअसल, साइबर अपराधियों के खिलाफ समय रहते सख्त कार्रवाई न होने से ऐसे तत्वों के हौसले बुलंद हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि वर्ग विशेष की मौन सहमति उन्हें प्राप्त है। ऐसे हमले समुदाय या लिंग विशेष पर न होकर पूरी सामाजिकता के ताने-बाने को क्षतिग्रस्त करते हैं। हाल ही में सामने आया 'बुल्ली बाई' एप का मामला इसी कड़ी का विस्तार है, जिसमें सोशल मीडिया पर सक्रिय संप्रदाय विशेष की महिलाओं की प्रतिष्ठा व गरिमा को ठेस पहुंचाने की कुत्सित कोशिश की गई। हालांकि, इस मामले में तल्ख प्रतिक्रिया के बाद सरकार ने इस विवादित एप पर रोक लगाई और विद्वेष फैलाने वाले समूह की मास्टर माइंड महिला व एक इंजीनियरिंग के छात्र को गिरफ्तार करके ऐसे तत्वों को सख्त संदेश भी दिया है। लेकिन इससे समाज में जो कटुता व विद्वेष फैला है, उसकी क्षतिपूर्ति इतनी आसान भी नहीं होगी। इस मामले में राष्ट्रीय महिला आयोग ने भी शीघ्र कार्रवाई के लिये पुलिस को कहा था। दरअसल, इस विवादित एप पर संप्रदाय विशेष की महिलाओं के चित्र अपलोड करके उनके बारे में अनुचित व अश्लील बातें लिखी गई थीं। इससे पहले गत वर्ष जुलाई में ऐसे ही विवादित एप का मामला संप्रदाय विशेष की महिलाओं को निशाने पर लेने के आरोपों के बीच सामने आया था। लेकिन दिल्ली व यूपी में आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई न होने से उससे मिलते-जुलते नये एप का मामला प्रकाश में आ गया। जाहिर बात है कि समय रहते कार्रवाई न होने से साइबर अपराधियों के हौसले बुलंद होते हैं। इसके बावजूद भले ही पुलिस ने मुख्य अपराधियों को पकड़ लिया है, लेकिन सामाजिक समरसता को इससे जो क्षति होती है, उसकी भरपाई संभव नहीं है। ऐसे में साइबर अपराधों से निपटने के लिये सख्त तंत्र विकसित करने की जरूरत है, अन्यथा ऐसी कुत्सित कोशिशों का समाज को बड़ा खमियाजा भुगतना पड़ेगा जो कालांतर कानून व्यवस्था के लिये चुनौती पैदा कर सकता है।निस्संदेह, वक्त आ गया है कि समाज में नफरत फैलाने वाले साइबर अपराधियों पर मजबूती से शिकंजा कसा जाये। अपराधों की पुनरावृत्ति रोकने के लिये यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि ऐसे अपराधियों पर समय रहते निर्णायक कार्रवाई की जाये, जिसके लिये तंत्र की प्रतिबद्धता जरूरी है। दरअसल, दुनिया भर में साइबर स्पेस तेजी से यौन विकृतियों, आर्थिक अपराधियों तथा महिलाओं को निशाने पर लेने वाले ट्रोलर्स का अड्डा बनता जा रहा है। भारत भी उसका अपवाद नहीं है। वर्ष 2020 में देश में महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराध के लगभग 2300 मामले प्रकाश में आये। इसके अलावा बड़ी संख्या में ऐसे पीड़ित होते हैं जो कई कारणों से शिकायत दर्ज कराने आगे नहीं आते। वर्ष 2019 में भी 1600 से अधिक ऐसे ही मामले दर्ज हुए।

# चलो ऐसा उपाय अपनाएं की लॉकडाउन लौट के न आए

**//कमलज्योति//**

जब हम हताश और निराश हो जाते हैं तो हमें जिदंगी का एक-एक पल चुनौतियों से भरा और बोझ सा लगने लगता है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि उम्मीद पर ही दुनियां टिकी है। जीवन मे आशा और निराशा दोनों होते हैं और हर इंसान के भीतर आशा और निराशा के बीच द्वंद चलता रहता है, इस दौरान हमारी सकारात्मक सोच ही होती है जो हमें उलझनों के बीच आशाओं की नई किरण दिखाती है। हमारी उम्मीदें हमें मुश्किल परिस्थितियों से उबार देती है। हम जानते हैं कि कोरोना महामारी की पहली और दूसरी लहर ने हमारा बहुत कुछ छीन लिया। किसी का बेटा, किसी का पति, भाई-बहन, किसी की मां, पिता और किसी के माता-पिता दोनों...यह एक ऐसी महामारी थी, जिसने बहुतों की जिंदगी असमय ही निगल ली और लाखों लोगों की जिंदगी को पटरी पर दौड़ानें वाली उससे जुड़े जीवनयापन के साधनों को तहस-नहस कर दिया। दहशत के साये में बीते दिनों को याद कर हर कोई सिहर उठता है। खैर समय के साथ एक बार फिर से पटरी पर लौट चुकी जिंदगी अब अच्छा दिन देखना चाहती है, लेकिन नये साल के आगाज के साथ कोरोना की तीसरी लहर और बढ़ती सख्या एक बार फिर सबकों सोचनें पर मजबूर कर रहा है। बीते सालों में लॉकडाउन के बीच कटी तनावपूर्ण जिंदगी जैसी परिस्थितियां फिर कोई नहीं चाहता है।

हम जानते हैं कि कोरोना की पहली लहर जब आई तो सिर्फइस बीमारी के नाम ने ही सभी को दहशत में डाल दिया था। दूसरी लहर में पीडितों की मौतों से सभी सिहर उठे थे। अब तीसरी लहर आने की बात कही जा रही है। खैर डेल्टा वैरियंट के बाद ओमिक्रॉन वैरियंट बहुत तेजी से एक-दूसरे तक फैलने की बात कही जा रही है। अभी तक की स्थिति में संख्या बढ़ने के साथ भयावह रूप और जानलेवा होने की जानकारी नहीं है। फिर भी हम सभी को चाहिए कि तीसरी लहर से बचने का इंतजाम अपने स्तर पर भी कर लेना चाहिए। क्योंकि कोई बीमारी या महामारी कब जानलेवा बन जाये कहा नहीं जा सकता। हमें

इसलिए भी खुद को भाग्यशाली मानना चाहिए कि हम पहली और दूसरी लहर में कोरोना का शिकार होने से बच गए हैं। कोरोना की तीसरी लहर को हमें अपनी हार न मानकर एक चुनौती और सीख के रूप में देखना चाहिए क्योंकि पहली और दूसरी लहर ने हमें मौका भी तो दिया है कि हम कैसे किसी बीमारी से बचने के लिए उपाय करें ? हम कैसे लॉकडाउन में रहे ? हम कैसे दूरियों को मेंटेन करे और स्वच्छता को अपनाते हुए शरीर को फिट रखने का उपाय करें ?

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हम ही वे लोग है, जो कोरोना को अपनी लापरवाही की वजह से एक-दूसरे तक फैलाते रहे। हम ही वे लोग है, जो शासन-प्रशासन को लॉकडाउन के लिए मजबूर कर देते हैं और अपनी लापरवाही से ही बहुत से उन लोगों का भी रोजी-रोटी छीन लेते हैं जो रोज कमाते खाते हैं। हम सभी जानते हैं कि लॉकडाउन सभी के लिए एक बड़ी मुसीबत के समान है। पटरी पर दौड़ती अर्थव्यस्था को चरमराने से लेकर विकास में बड़ा बाधक भी है। हमारे सामान्य जनजीवन से देश और राज्य की अर्थव्यवस्था जुड़ी हुई है। दुकान से सामान खरीदने से लेकर, होटल में रूकने, खाने और बस-रेल की यात्राओं, सिनेमा आदि में हम सरकार को जीएसटी के रूप में टैक्स देते हैं। यह सभी राशि देश के विकास में खर्च होती है। विगत दो साल में कोरोना की वजह से हुई लॉकडाउन ने आर्थिक गतिविधियों को बहुत नुकसान पहुचाया। छोटे-छोटे अनेक उद्योग धंधे बंद हो गए। व्यापार शून्य होने से लाखों लोग बेरोजगार भी हुए। लॉकडाउन से सभी को कुछ न कुछ नुकसान जरूर उठाना पड़ा।अब जबकि तीसरी लहर का खतरा मंडराया हुआ है। सभी के भीतर लॉकडाउन को लेकर चर्चाएं होने लगी है। शासन-प्रशासन भी हर पहलुओं पर नजर बनाए हुए हैं। युद्धस्तर पर कोविड अस्पताल और वार्ड और बेड की अतिरिक्त व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है। उनकी कोशिश है कि सभी कोरोना गाइडलाइन का पालन कर कोरोना को फैलने से रोकने में सहयोग करें। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने लॉकडाउन को अंतिम विकल्प के रूप में माना है। उन्होंने बैठक लेकर समीक्षा लेना भी प्रारंभ कर दिया है और कोरोना से डरने की बजाय सभी को सतर्क रहने कहा है।हम सभी को भी चाहिए कि मुख्यमंत्री की बातों पर गौर करें और कोरोना प्रोटोकॉल का पालन कर अपने शहर या राज्य में लॉकडाउन जैसी समस्या को उत्पन्न न करें। हम जानते हैं कि पहली और दूसरी लहर में लॉकडाउन के बीच कोरोना का जब खौफथा, तब हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री ने अप्रवासी मजदूरों को लाने और अन्य राज्य के मजदूरों को उनके प्रदेश भेजने में कोई चूक या देरी नहीं की थी। भीषण धूप और गर्मी में राज्य के सीमावर्ती जिलों में छांव, खान-पान से लेकर नंगे पांवों में चप्पलें, मजदूरों से लेकर छात्रों के लिए रेल और बसों की व्यवस्था, ऑक्सीजन सिलेण्डरों के साथ प्रत्येक जिलों में भोजन वितरण तथा राशन दुकानों से खाद्यान की अतिरिक्त व्यवस्था सुनिश्चित की। गांव-गांव मनरेगा के माध्यम से मजदूरों को काम देकर, वनवासियों से वनोपज खरीदकर और राजीवगांधी किसान न्याय योजना, गोधन न्याय योजना के माध्यम से किसानों के जेब में पैसे डाले। इन सभी से छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था पर ज्यादा असर नहीं पड़ा। सामुदायिक, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से लेकर जिला अस्पतालों में सुविधाएं बेहतर करने के साथ राज्य सरकार ने स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर बनाने तथा अन्य सुविधाओं के लिए बजट राशि भी बढ़ाई। कोरोना प्रबंधन की दिशा में छत्तीसगढ़ सरकार का प्रयास अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर ही था। अत: हम समझ सकते हैं कि बुरे वक्त में सरकार हमारे साथ है। हमें भी चाहिए कि कोरोना से निपटने के लिए हम भी सरकार का सहयोग करे। जहां तक संभव है और आसान है वहां हम अपनी जिम्मेदारी का परिचय देते हुए जीवन के लिए जरूरी उपायों को अपनाएं। हम नियमित रूप से मास्क पहने। एक-दूसरे से 6 फीट की दूरी को अपनाते हुए भीड़ का हिस्सा न बनें। अनावश्यक घर से बाहर न निकले। सेनेटाइजर का इस्तेमाल करे और नियमित रूप से हाथ धोते रहें। कहीं भी इधर-उधर न थूके। टीका यदि नहीं लग पाया है तो दोनों डोज जरूर लगवा लें। सर्दी, खासी, बुखार या दर्द जैसी कोई लक्षण दिखे तो नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र में अपना उपचार कराएं। कोरोना का लक्षण सामने आने पर चिकित्सकों के अनुसार दवाइयां लें और एक जिम्मेदार नागरिक बनकर होम आइसोलेशन में या अस्पताल में रहकर पूरी तरह ठीक होने तक किसी के सम्पर्क में न आये। शादी, जन्मदिन, रैली, सभा जैसे कार्यक्रमों में भीड़ न जुटाए। जीवन अनमोल है। खुशियां मनाने के और भी बहुत मौके आएंगे। आपकी सावधानी और समझदारी न सिर्फआपकों और आपके परिवार को कोरोना होने से बचायेगी। सजग होकर व्यापारिक गतिविधियों का संचालन, परिवहन, निर्माण सहित विकास कार्यों में भी अपना योगदान सुनिश्चित कर सकते हैं। इससे देश के अर्थव्यवस्था पर न तो असर होगा और किसी की रोजी-रोटी छीनने या रोजगार जाने का खतरा भी उत्पन्न नहीं होगा। हम अपने राज्य और देश के विकास में अपनी भागीदारी तो सुनिश्चित कर पायेंगे ही, लॉकडाउन जैसी समस्या जो हमें डरा रही है उससे भी छुटकारा पा सकते हैं।

# अपने अनुकूल नजरिया बदलने की कला

**रेनू सैनी**

इस शताब्दी के 21 साल बीत गए। नये वर्ष की शुरुआत हो चुकी है। प्रत्येक व्यक्ति की यह कामना होती है कि नये वर्ष का जीवन एवं कार्य पुराने वर्ष से अच्छा हो। किसी भी वर्ष को सफल बनाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि व्यक्ति को दूसरों के साथ कार्य एवं व्यवहार की समझ हो। कई संबंध केवल इसलिए बिखर और बिगड़ जाते हैं क्योंकि व्यक्तियों को दूसरों के नज़रिए को प्रभावित करने की कला नहीं आती।

दूसरों पर नियंत्रण के लिए यहां किसी जादू की बात नहीं की जा रही है, अपितु एक मनोविज्ञान के नियम को उजागर किया जा रहा है। इस नियम को जानकर प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के कार्य और दृष्टिकोण पर सहजता से नियंत्रण पा सकता है। क्या आपको यह ज्ञात है कि जिन मामलों में आपके साथ अशिष्ट व्यवहार हुआ, आपको निम्नतर आंका गया, उनमें से 95 प्रतिशत मामलों में दरअसल आपने खुद ऐसी स्थिति की मांग की थी। उस समय आप सामने वाले के कार्य को नियंत्रित कर रहे थे और उसे मजबूर कर रहे थे कि वह आपके साथ अशिष्टता करे।

यह पढ़कर आपको अचरज हो रहा होगा कि भला यह कैसे हो सकता है? लेकिन यह सत्य है। मनोविज्ञान का नियम जानकर आप भी उपरोक्त कथन से सहमति जताए बिना नहीं रह पाएंगे। मनोविज्ञान का नियम है कि व्यक्ति सामने वाले द्वारा किए गए कार्य अथवा कथन पर समान प्रतिक्रिया करता है। समान प्रतिक्रिया करना सहज है लेकिन इससे मिलने वाले परिणाम आश्चर्यजनक हैं। हम कई बार व्यक्ति को बिना जाने-समझे ही उसके बारे में निर्णय कर लेते हैं कि वह सही नहीं है। यह धारणा बनाने के बाद हम उससे उसी के अनुरूप व्यवहार करते हैं, जिससे वह नकारात्मक प्रतिक्रिया दे। उसकी नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने के बाद हम अपनी पीठ थपथपाते हैं कि अमुक व्यक्ति के बारे में मेरी राय सटीक थी।

अमेरिकी नौसेना के साथ केनयॉन कॉलेज के स्पीच रिसर्च यूनिट ने यह साबित किया है कि जब किसी व्यक्ति पर चिल्लाया जाता है, तो वह व्यक्ति भी पलटकर चिल्लाए बिना नहीं रह सकता, भले ही वह वक्ता को न देख पाए। इस बात को जांचने के लिए फोन और इंटरकॉम पर एक परीक्षण किया गया। वक्ता फोन पर सरल सवाल पूछता था लेकिन हर बार सवाल अलग-अलग स्वर में पूछा जाता था। हैरत की बात यह थी कि जिस सुर में प्रश्न पूछा जाता था, उसी सुर में जवाब आता था। यदि प्रश्न सौम्य और सहज स्वर में होता था तो जवाब भी उसी सुर में। यदि प्रश्न क्रोध और रोषभरे स्वर में पूछा जाता था तो जवाब भी क्रोध एवं रोषपूर्ण होता था। यदि प्रश्न चिल्ला कर पूछा जाता था तो उत्तर भी चिल्ला कर ही मिलता था।

यदि इस मनोवैज्ञानिक परीक्षण को जीवन में इस्तेमाल किया जाए तो प्रत्येक व्यक्ति सामने वाले के क्रोध, डांट एवं नकारात्मक व्यवहार को अपने नियंत्रण में ले सकता है और छोटे से लेकर बड़े संबंध को सुधार सकता है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि व्यक्ति जितनी ऊंची आवाज में बोलता है, उसे क्रोध भी उतना ही तेज आता है। आवाज की गति धीमी रखने पर क्रोध नहीं आता। क्या आपने कभी किसी को मद्धिम स्वर में लड़ते अथवा गुस्सा करते देखा है? नहीं न। लड़ाई एवं क्रोध आवाज़ की हाई पिच पर ही होते हैं। मनोविज्ञान इस बात को स्वीकार कर चुका है कि नर्म आवाज और मंद स्वर का जवाब क्रोध एवं लड़ाई को मोड़ देता है। उपरोक्त तथ्य को जानने के बाद सामने वाले की भावनाओं एवं मूड को आश्चर्यजनक तरीके से नियंत्रित किया जा सकता है। इसे अप्रत्यक्ष रूप से जादू कहा जा सकता है। लेकिन यह आश्चर्यजनक कमाल जादू का नहीं बल्कि मनोविज्ञान के नियम का होता है। कई बार व्यक्ति को जब बहुत अधिक क्रोध आ रहा होता है तो वह कुछ नहीं देखता।

# बिटकॉइन की चुनौती और डिजिटल करेंसी

**भरत झुनझुनवाला**

भारतीय रिजर्व बैंक डिजिटल करेंसी जारी करने पर विचार कर रहा है। डिजिटल करेंसी हमारे नोट की तरह ही होती है। अंतर यह होता है कि यह कागज पर छपा नोट नहीं होता है बल्कि यह एक नंबर मात्र होता है जिसे आप अपने मोबाइल अथवा कम्प्यूटर पर संभाल कर रख सकते हैं। उस नंबर को किसी के साथ साझा करते ही उस नंबर में निहित रकम सहज ही दूसरे व्यक्ति के पास पहुंच जाती है। जैसे आप अपनी जेब से नोट निकाल कर दूसरे को देते हैं उसी प्रकार आप अपने मोबाइल से एक नंबर निकाल कर दूसरे को दे कर अपना पेमेंट कर सकते हैं।

डिजिटल करेंसी के पीछे क्रिप्टो करेंसी का जोर है। क्रिप्टो करेंसी का इजाद बैंकों के नियंत्रण से बाहर एक मुद्रा बनाने की चाहत को लेकर हुआ था। कुछ कंप्यूटर इंजीनियरों ने मिलकर एक कठिन पहेली बनाई और उस पहेली को उनमें से जिसने पहले हल कर लिया उसे इनाम स्वरूप एक क्रिप्टो करेंसी अथवा बिटकॉइन या एथेरियम दे दिया। उस बिटकॉइन के निर्माण का खेलने वाले सभी ने अनुमोदन कर दिया कि यह नंबर फलां व्यक्ति को दिया जाएगा। इसी प्रकार नये बिटकॉइन बनते गए और इनका बाजार में प्रचलन होने लगा।

क्रिप्टो करेंसी केंद्रीय बैंकों के नियंत्रण से पूर्णतया बाहर है। जैसे यदि गांव के लोग आपस में मिलकर एक अपनी करेंसी बना लें तो उस पर सरकार का नियंत्रण नहीं रहता है। वे आपस में पर्चे छाप कर एक-दूसरे से लेनदेन कर सकते हैं जैसे बच्चे आपस में कंचे के माध्यम से लेनदेन करते हैं। क्रिप्टो करेंसी का नाम 'इंक्रिप्टेड' से बनता है। जिस कम्प्यूटर में यह करेंसी रखी हुई है अथवा जो उस कम्प्यूटर का मालिक है उसका नाम इंक्रिप्टेड या गुप्त है। किसी को पता नहीं लग सकता है कि वह करेंसी किसके पास है। इस करेंसी को बनाने का उद्देश्य था कि सरकारी बैंकों द्वारा कभी-कभी अधिक मात्रा में नोट छाप कर बाजार में डाल दिए जाते हैं जिससे महंगाई बहुत तेजी से बढ़ती है। लोगों की सालों की गाढ़ी कमाई कुछ ही समय में शून्यप्राय हो जाती है। जैसे यदि आप 100 रुपए के नोट से वर्तमान में 5 किलो गेहूं खरीद सकते हैं। महंगाई तेजी से बढ़ने के बाद उसी 100 रुपये के नोट से आप केवल 1 किलो गेहूं खरीद पायेंगे। ऐसी स्थिति वर्तमान में ईरान और वेनेजुएला जैसे देशों में है। इस प्रकार की स्थिति से बचने के लिए इन इंजीनियरों ने क्रिप्टो करेंसी का आविष्कार किया, जिससे कि बैंकों द्वारा नोट अधिक छापे जाने से उनकी क्रिप्टो

करेंसी की कीमत पर कोई प्रभाव नहीं पड़े।

केंद्रीय बैंकों द्वारा क्रिप्टो करेंसी का विरोध तीन कारणों से किया जा रहा है। पहला यह कि अर्थव्यवस्था केंद्रीय बैंक के नियंत्रण से बाहर निकलने को हो जाती है। जैसे यदि देश में महंगाई अधिक हो रही है और रिजर्व बैंक ने मुद्रा के प्रचलन को कम किया तो क्रिप्टो करेंसी का चलन बढ़ सकता है और सरकार की नीति फेल हो सकती है। दूसरा विरोध यह है कि क्रिप्टो करेंसी फेल हो सकती हैं। जैसे यदि कम्प्यूटर का नंबर हैक हो जाये अथवा क्रिप्टो करेंसी बहुत बड़ी संख्या में बनाई जाने लगे तो आज जिस बिटकॉइन को आप ने एक लाख रुपये में खरीदा है, वह कल पांच हजार रुपये का हो सकता है। तीसरा विरोध यह कि क्रिप्टो करेंसी का उपयोग आपराधिक गतिविधियों को सपोर्ट करने के लिए किया जा सकता है। बीते समय में अमेरिका की एक तेल कंपनी के कम्प्यूटरों को अपराधियों ने हैक कर लिया। उन कम्प्यूटरों को वापस ठीक करने के लिए कंपनी से भारी मात्रा में रकम क्रिप्टो करेंसी के माध्यम से वसूल कर ली। यद्यपि उसमें से कुछ रकम को पुलिस वापस वसूल कर सकी लेकिन बड़ी रकम आज भी वसूल नहीं हो सकी है। इसलिए अपराधियों के लिए क्रिप्टो करेंसी सुलभ हो जाती है क्योंकि वह अपनी आपराधिक गतिविधियों से अर्जित गैर-कानूनी आय को सरकारी नज़र की पहुंच के बाहर रख सकते हैं। इसलिए यदि केंद्रीय बैंक जिम्मेदार है और अर्थव्यवस्था सही चल रही है तो क्रिप्टो करेंसी उसे अस्थिर बना सकती है।

दूसरी तरफ यदि बैंक गैर-जिम्मेदार है, जैसे महंगाई बेतहाशा बढ़ रही है तो क्रिप्टो करेंसी लाभप्रद हो जाती है। उस परिस्थिति में व्यापार करना कठिन हो जाता है। आज आपने किसी व्यापारी से एक बोरी गेहूं का सौदा 1,000 रुपये में किया। कल उस 1,000 रुपये की कीमत आधी रह गयी। बेचने वाले ने सौदे से इनकार कर दिया। आप यह सौदा क्रिप्टो करेंसी में करते तो यह कठिनाई नहीं आती। अत: यदि केंद्रीय बैंक द्वारा बनाई गई मुद्रा अस्थिर हो तो क्रिप्टो करेंसी के माध्यम से व्यापार सुचारु रूप से चल सकता है। यदि वेनेजुएला की मुद्रा का मूल्य तेजी से गिर रहा है तो वहां के व्यापारी क्रिप्टो करेंसी के माध्यम से आपस में व्यापार कर सकते हैं और इस समस्या से बच सकते हैं। मूल बात यह है कि यदि केंद्रीय बैंक जिम्मेदार है तो क्रिप्टो करेंसी अस्थिरता पैदा करती है लेकिन यदि केंद्रीय बैंक गैर-जिम्मेदार है तो क्रिप्टो करेंसी लाभप्रद हो सकती है।

इस स्थिति में कई केंद्रीय बैंकों ने डिजिटल करेंसी जारी करने का मन बनाया है। डिजिटल करेंसी और क्रिप्टो करेंसी में समानता यह है कि दोनों एक नंबर होते हैं जो आपके मोबाइल में रखे जा सकते हैं। लेकिन क्रिप्टो करेंसी की तरह डिजिटल करेंसी गुमनाम नहीं होती है। रिजर्व बैंक द्वारा इसे उसी तरह जारी किया जाएगा जैसे नोट छापे जाते हैं। रिजर्व बैंक जान सकती है कि वह रकम किस मोबाइल में रखी हुई है। इसलिए डिजिटल करेंसी केंद्रीय बैंक के गैर जिम्मेदाराना व्यवहार से हमारी रक्षा नहीं करती है। नोट छापने की तरह केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी भी भारी मात्रा में जारी करके महंगाई पैदा कर सकती है। लेकिन फिरभी मुद्रा को सुरक्षित रखने में डिजिटल करेंसी मदद करती है क्योंकि आपको नोटों को आग, पानी और चोरों से बचाना नहीं है। यदि कभी आप अपनी करेंसी का नंबर भूल जायें अथवा आपका मोबाइल चोरी हो जाये तो आपकी पहचान करके उसे वापस प्राप्त करने की व्यवस्था की जा सकती है।

डिजिटल करेंसी का हमें स्वागत करना चाहिए विपरीत इसके कि यह केंद्रीय बैंक के गैर-जिम्मेदाराना आचरण से हमारी रक्षा नहीं करती है। केंद्रीय बैंक के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार को इस प्रकार के तकनीकी आविष्कारों से नहीं रोका जा सकता है। उसे ठीक करने का कार्य अंतत: राजनीति का है और उस व्यवस्था को सुदृढ़ करना चाहिए। लेकिन डिजिटल करेंसी के माध्यम से नोट को छापने और रखने का खर्च कम होता है और आपस में लेनदेन भी सुलभ हो सकता है इसलिए हमें डिजिटल करेंसी का स्वागत करना चाहिए।

**लेखक आर्थिक मामलों के जानकार हैं।**

# बहुत कुछ रखा है नाम बदलने में

**आलोक पुराणिक**

चीन के और तमाम आइटम भले ही फर्जी हों, पर चिरकुटई एकदम असली है। चीन ने बैठे-बिठाये अरुणाचल प्रदेश से जुड़े कई नाम बदल दिये। चीन से जुड़े कई नाम भी बदले जा सकते हैं। जैसे शंघाई का नाम शकरपुर हो सकता है या बीजिंग का नाम नवी मुंबई हो सकता है। होने को बहुत कुछ हो सकता है। हो भी रहा है। नाम में क्या रखा है—शेक्सपियर कह गये हैं, शेक्सपियर न चीन के थे न ही भारत के थे। भारत और चीन में तो नाम में बहुत कुछ रखा है। कोई आइटम अगर चाइनीज ब्रांड की हो जाये, तो उससे घटियापने पर सस्तेपने की उम्मीद बांध ली जाती है। अगर किसी आइटम का नाम एप्पल पर धर दिया जाये, तो लोग समझ जाते हैं कि बहुत महंगा होगा। समोसा भी अगर एप्पल का समोसा हो जाये, तो फिर एक समोसा एक हजार का बिक सकता है और समोसा खाते-खाते भी बंदे से पैसे चार्ज कर लिये जायेंगे कि लो जी चटनी का अपग्रेड आ गया है, निकालो पैसे। एप्पल वाले हर आइटम का अपग्रेड करते हैं, और इसके जरिये अपने मुनाफे का अपग्रेड लगातार करते हैं।

नाम में, ब्रांड में बहुत कुछ धरा है। इसलिए नाम चेंज होने से मसले खड़े हो जाते हैं। मसले खड़े हों, इसीलिए तो चीन अरुणाचल प्रदेश से जुड़े नाम बदल देता है। इसे चीन अपनी शराफत बता सकता है कि देखो, भारत में चाइनीज फूड के ठेलों से वह रॉयल्टी नहीं वसूलता। चीन सब कुछ अपना ही मानता है, बस कोरोना वायरस को छोड़कर, जो मूलत: खालिस एकदम चाइनीज है।

भारत में भी बहुत क्रिएटिव लोग हैं। योगी आदित्यनाथ ने अभी इस मामले में गंभीरता नहीं दिखायी है। समस्त चीन का नाम चाणक्यदेशम् रखा जा सकता है। चीन के गुआनडोंग का नाम गणेशपुरम किया जा सकता है। बीजिंग का नाम बद्रीनगर किया जा सकता है, यूपी में चुनाव आने वाले हैं। शेनजन का नाम समस्तीपुर रखा जा सकता है, बिहार के चुनाव में कभी काम आयेगा यह 'नाम बदला'। हैंगजाऊ का नाम हनुमंतपुरम किया जा सकता है। तियान्जिन का नाम त्रिलोकेशपुरम किया जा सकता है। हुआन का नाम हृदयपुरम हो सकता है। चांगशा का नाम चंद्रपुरम किया जा सकता है। संभावनाएं अपार हैं। विदेश मंत्रालय योगी आदित्यनाथ के हवाले किया जाये, तो चीन कुछ ही दिनों में भारत का उपनगर जैसा कुछ हो सकता है।

नाम में बहुत कुछ रखा है। चाइनीज ब्रांड का भारत में एक खास अर्थ होता है। चाइनीज ही अगर अपना नाम बदलकर अमेरिकन कर दें, तो उनसे एप्पल टाइप की उम्मीदें हो जायेंगी। खैर, अगर चीन को सबक सिखाना है, तो योगी आदित्यनाथ को चीन से जुड़े नाम बदलने का टास्क दे दिया जाना चाहिए।

# आज का राशिफल

**मेष :** दिन के प्रारंभ में आप मानसिक दुविधाओं में खोए रहेंगे। अन्य लोगों के साथ आप जिद्दी व्यवहार छोड़ देंगे और समाधानकारी व्यवहार अपनाएंगे।

**वृष :** आपका आज का दिन मध्यमफलदायी रहेगा, दिवस के प्रारंभ में आपको शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्फूर्ति और आनंद का अनुभव होगा। आपकी सर्जनात्मक तथा कलात्मक शक्तियों में वृद्धि हो सकती है।

**मिथुन :** आपका आज का दिन मिश्र फलदायी रहेगा, । आज आप चिंता से घिरे रहेंगे और शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में भी मतभेद रहेगा, परंतु मध्याह्न के बाद आप सभी कार्यों में अनुकूलता का अनुभव करेंगे।

**कर्क :** आपका दिन प्रात:काल में पारिवारिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में लाभदायी है। स्त्रीवर्ग से लाभ होने के भी योग हैं। किसी प्रिय से भेंट होगी। मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, परंतु मध्याह्न के बाद आपके मन में विविध प्रकार की चिंताएं उठेंगी, जो कि पारिवारिक वातावरण को बिगाड़ सकती हैं।

**सिंह :** आज का दिन आनंदपूर्वक बीतेगा, व्यवसाय और व्यापार करनेवालों के लिए आज का दिन लाभदायी है। व्यापार में वृद्धि होगी। परिवारजनों तथा मित्रों के साथ आनंदपूर्वक पलों को मनाएंगे।

**कन्या :** नए कार्य का प्रारंभ करने के लिए समय अनुकूल है। आज आपके भीतर कुछ अधिक धार्मिकता रहेगी। कार्यालय या व्यावसायिक स्थल पर कार्यभार अधिक रहेगा। विदेश जाने के इच्छुक लोगों के लिए अवसर उपस्थित होने की संभावना है। मध्याह्न के बाद नए कार्य का आयोजन कर सकेंगे। अपूर्ण कार्य पूर्णता की दिशा में आगे बढ़ेंगे। व्यवसाय में बढ़ोतरी की संभावनाएं हैं। गृहस्थ जीवन में मधुरता छाई रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा।

**तुला :** खान-पान में आज विशेष ध्यान रखने के लिए गणेशजी सूचन करते हैं। दिन के दौरान नए कार्य का प्रारंभ करने के लिए समय अनुकूल नहीं है। अधिक कार्य से शिथिलता और मानसिक व्यग्रता का अनुभव आप करेंगे। प्रवास लाभदायी नहीं है, परंतु मध्याह्न के बाद आपको कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

**वृश्चिक :** आप आज दांपत्यजीवन को विशेष रूप से मना सकेंगे और उसके सुख का भी अनुभव कर सकेंगे। परिवारजनों के साथ सामाजिक समारोह में शामिल होंगे। छोटे से प्रवास का भी योग है। मध्याह्न के बाद आपका स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। मानसिक रूप से कुछ व्यग्रता का भी अनुभव करेंगे। मध्याह्न के बाद नए कार्य का प्रारंभ न करिएगा।

**धनु :** आज का दिन शुभफलदायी होगा, । शरीर और मन से अस्वस्थ रहते हुए भी आप अपने अपूर्ण कार्यों को पूर्ण कर सकेंगे। आर्थिक आयोजन भी बहुत अच्छी तरह से कर सकेंगे। कार्यालय में सहकर्मचारियों का सहयोग आपको मिलेगा। परिवारजन और मित्रों की घनिष्ठता में वृद्धि होगी। दांपत्यजीवन आनंददायी रहेगा।

**मकर :** वैचारिक स्तर पर विशालता और मधुरवाणी से आप अन्य जनों को प्रभावित कर सकेंगे, वाणी की मधुरता आपको नए संबंध बनाने में भी काम आएगी। आर्थिक आयोजन भी आज आप अच्छी तरह से कर सकेंगे। आज का पूरा दिन आनंद के साथ बीतेगा।

**कुंभ :** आज आप अपने सभी कार्य को आत्मविश्वासपूर्वक ठीक तरह से संपन्न कर सकेंगे, । आर्थिक व्यवहार में भी आपको सफलता मिलेगी। पैतृक संपत्ति से लाभ होगा। फिर भी वाहन, मकान आदि के पत्रों से संबंधित कार्यवाही में सावधानीपूर्वक आगे बढ़िएगा। आपकी वैचारिक समृद्धि में वृद्धि होगी। मन में प्रफुल्लितता रहेगी।**मीन :** आनंद और उत्साह में वृद्धि होगी। आर्थिक विषयों पर आप अधिक ध्यान दे सकेंगे। आप किसी भी कार्य को दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ कर पाएंगे।पितृपक्ष से लाभ होने की भी संभावना है। परंतु, जमीन से जुड़े विषयों के कार्य में सावधानी रखिएगा।